''भगवान कभी अवतार नहीं लेते''

– युवाचार्यश्री महाश्रमण

लाडनूं, 12 मई।

जैन दर्शन के अनुसार जो व्यक्ति मोक्ष चला जाता है, आत्मा से परमात्मा बन जाता है, वह भगवान होता है। भगवान कभी अवतार नहीं लेते। उनका फिर इस संसार में परिभ्रमण नहीं होता। वे जन्म मृत्यु से उपर उठ जाते हैं।

उक्त विचार युवाचार्यश्री महाश्रमण ने जैन विश्व भारती के सुधर्मा सभा में जनसमुदाय को संबोधित करते हुए फरमाये।

युवाचार्यप्रवर ने फरमाया कि इस संसार में अनंत जीव है। उनका पर्याय परिवर्तन होता रहता है, पर वे कभी कम नही होते और न ही ज्यादा होते हैं। उन्होंने कहा कि आत्मा शाश्वत है, अमर है। न तो उसको कोई काट सकता है और न ही मार सकता है। जब आत्मा अपने मूल शुद्ध स्वरूप में आती है तो वह सिद्ध बन जाती है। उन्होंने जीव तत्व की विशद व्याख्या करते हुए कहा कि राग–द्वेष से मुक्त होने की साधना करने वाला ही आत्मा के मूल स्वरूप का अहसास कर सकता है। राग–द्वेष की तरंगों को शांत करने के लिए स्वयं की प्रज्ञा को जागृत करना जरूरी है।

युवाचार्यश्री ने फरमाया कि हमारा लक्ष्य वीतरागता है। गंतव्य दूर है, पर जब चलना प्रारंभ किया जायेगा तो मंजिल अपने आप मिल जायेगी।

एम.ए. छात्रों ने लिया जीवन विज्ञान का प्रशिक्षण

जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के पत्राचार पाठ्यक्रम से एम.ए. करने वाले छात्र–छात्राओं ने आचार्यश्री महाप्रज्ञ के शिष्य मुनि किशनलालजी से जीवन विज्ञान का प्रशिक्षण प्राप्त किया। मुनि किशनलालजी ने जीवन विज्ञान योग प्रशिक्षण की बारह ईकाइयों का परिचय देते हुए श्वास प्रेक्षा, नमस्कार महामंत्र मुद्रा एवं आसनों के विभिन्न प्रयोग करवाएं। उन्होंने कहा कि जीवन विज्ञान ऐसी शिक्षा है जिससे जीवन में परिवर्तन कर सकते हैं। श्रेष्ठ जीवन जीने के लिए जीवन विज्ञान के प्रयोगों को आवश्यक बताया।

– अशोक सियोल
99829 03770